Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

विश्वेद परिषत् पुष्पमाला का प्रथम पुष्प

8153

वेदों का महत्व

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
DONATION

लेखक :
ब्रह्मनिष्ठ स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती विद्यामार्तण्ड
(अध्यक्ष विश्ववेद परिषत्)
आनन्दकुटीर, ज्वालापुर (उ०प्र०)

प्रकाशिका :
विश्ववेद परिषत्

चतुर्थ बार
१०००

मूल्य :
७५ पैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं० विश्वनाथ जी
द्वारा प्रदत्त संग्रह
9

ओ३म्

विश्वेद परिषत् पुष्पमाला का प्रथम पुष्प

वेदों का महत्त्व

पुस्तकालय
पुस्तकालय
DONATION

लेखक :
ब्रह्मनिष्ठ स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती विद्यामार्तण्ड
(अध्यक्ष विश्ववेद परिषत्)
आनन्दकुटीर, ज्वालापुर (उ०प्र०)

प्रकाशिका :
विश्ववेद परिषत्

चतुर्थ बार
१०००

मूल्य :
७५ पैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशक :

आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री एम.ए.
मन्त्री
विश्ववेद परिषत्
सी. ८१७ महानगर लखनऊ ६ उ०प्र०

चतुर्थ वार १०००
मूल्य : ७५ पैसे

मुद्रक :
"महालक्ष्मी" गुरुद्वारा रोड, ज्वालापुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

वेदों का महत्त्व

भूमिका

ईश्वरीय ज्ञान रूप वेदों के महत्त्व को ब्राह्मणों, उपनिषदों, स्मृतिकारों, दर्शन शास्त्रकारों आदि ने एक मत से स्वीकार किया है और उनके स्वाध्याय का बड़ा उत्तम फल बताया है। यह दुःख की बात है कि आज कल के अनेक सुरक्षित भारतीय भी (विदेशियों की तो बात ही अलग है) वेदों के इस सर्व शास्त्र सम्मत और युक्ति सङ्गत महत्त्व से प्रायः अपरिचित हैं अतः विश्ववेद परिषद् प्रकाशन के प्रथम पुष्प के रूप में मेरी इस लघु रचना 'वेदों का महत्त्व' को परिषद् की ओर से प्रकाशित किया जा रहा है। इस पुस्तिका के ३ संस्करण आर्यकुमार सभा (रजि०) किंग्ज़वेद कैम्प देहली द्वारा प्रकाशित हुए थे किन्तु अब उनकी एक भी प्रति प्राप्तव्य नहीं है। अतः आवश्यक परिवर्तन परिवर्धन के साथ उसे विश्ववेद परिषद् की ओर से (जिसका मुख्य उद्देश्य वेदों और उनकी सार्वभौम युक्ति युक्त शिक्षाओं का सब समुचित साधनों से विश्व में प्रचार और वेद विषयक भ्रान्तियों का निवारण है) प्रकाशित किया जा रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इसके अध्ययन से पाठकों को वेदों के महत्त्व का ज्ञान होगा और वे उनके स्वाध्याय से अपने जीवनों को पवित्र बनाने का निश्चय करेंगे। मैं चाहता हूं कि इस पुस्तक में प्रकाशित (वेद गौरव गान) को सब याद कर लें और परिवारों में मिलकर बोला करें।

धर्मानन्द सरस्वती विद्यामार्तण्ड
अध्यक्ष विश्ववेद परिषद्
आनन्द कुटीर, ज्वालापुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ ओ३म् ॥

वेदों का महत्त्व

वेद विषयक परम्परागत विश्वास

वेदों के विषय में आर्यों का यह परम्परागत विश्वास चला आ रहा है कि वे ईश्वरीय ज्ञान हैं। परम कारुणिक सर्वज्ञ भगवान् ने मनुष्यमात्र के कल्याणार्थ मानव सृष्टि के प्रारंभ में यह पवित्र ज्ञान अग्नि, वायु, आदित्य और अङ्गिरा संज्ञक चार ऋषियों के पवित्रान्तःकारण में प्रकाशित किया जिससे सब मनुष्यों को वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय तथा विश्व विषयक सब कर्त्तव्यों का यथार्थ ज्ञान प्राप्त हो सके और उसके द्वारा वे सुख, शान्ति तथा आनन्द को प्राप्त कर सकें। प्राचीन समस्त साहित्य में इस विश्वास का समर्थन स्पष्ट शब्दों में पाया जाता है। समस्त स्मृतिकार, दर्शन शास्त्रकार, उपनिषत्कार तथा रामायण, महाभारत, श्रौतसूत्र, गृह्य-सूत्रादि के लेखक यहां तक कि पुराणकार स्पष्टतया वेदों को ईश्वरीय तथा स्वतः प्रमाण और अन्य सब ग्रन्थों को परतः प्रमाण मानते हैं। उदाहरणार्थ, मनु महाराज ने अपनी स्मृति में कहा है कि—

"वेदोऽखिलो धर्ममूलम् ।" (मनु० २।६)

अर्थात् ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद नामक सम्पूर्ण वेद धर्म का मूल है। वही धर्म के विषय में स्वतः प्रमाण हैं।

धर्म जिज्ञासमानानां, प्रमाणं परमं श्रुतिः ॥ मनु० २।१३

अर्थात् जो धर्म का ज्ञान प्राप्त करना चाहते है उनके लिए परम प्रमाण वेद ही है। मनु महाराज ने वेदों का महत्त्व बताते हुए यहां तक कह दिया कि—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पितृदेवमनुष्याणां वेदश्चक्षुः सनातनम् ।
अशक्यं चाप्रमेयं च, वेदशास्त्रमिति स्थितिः ॥१२।९४॥
चातुर्वर्ण्यं त्रयो लोकाः, चत्वारश्चाश्रमाः पृथक ।
भूतं भव्यं भविष्यच्च, सर्वं वेदात्प्रसिद्धयति ॥१२।९७॥
बिभर्ति सर्वभूतानि, वेदशास्त्रं सनातनम् ।
तस्मादेतत्परं मन्ये, यज्जन्तोरस्य साधनम् ॥मनु० १२।९९॥

सारांश यह है कि वेद पितर, देव, मनुष्य सब के लिए सनातन मार्गदर्शक नेत्र के समान है। उसकी महिमा का पूर्णतया प्रतिपादन करना अथवा उसको पूर्णतया समझ लेना बड़ा कठिन है। चारों वर्ण, तीन लोक, चार आश्रम, भूत भविष्यत् और वर्तमान विषयक ज्ञान वेद से ही प्रसिद्ध होता है। सनातन (नित्य) वेदशास्त्र सब प्राणियों को धारण करता है, यही सब मनुष्यों के लिए भवसागर से पार होने का साधन है, इत्यादि।

ब्राह्मण ग्रन्थों और उपनिषदों के वेद-महत्त्व विषयक कुछ वचन

ब्राह्मण ग्रन्थों और उपनिषदों में भी वेदों को ईश्वरीय ज्ञान मानने का स्पष्ट प्रतिपादन है यथा शतपथ ब्राह्मण तथा तदन्तर्गत बृहदारण्यकोपनिषद् में स्पष्ट कहा है कि–

एतस्य वा महतो भूतस्य निश्वसितमेतत् ।
यत् ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्ववेदः ॥ (बृह० ४।५।११)

अर्थात् ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद उस महान् परमेश्वर के मानो निःश्वास रूप हैं।

शतपथ ब्राह्मण में कहा है कि–

स (प्रजापतिः) श्रान्तस्तपन् ब्रह्मैव, प्रथममसृजत त्रयीमेव विद्याम् ॥

अर्थात् प्रजापति परमेश्वर ने अपने तप वा पूर्ण ज्ञान से वेदों का निर्माण किया जिसे त्रयीविद्या के नाम से भी कहा जाता है क्योंकि उनमें ज्ञान, कर्म और उपासना का प्रतिपादन है।

मुण्डकोपनिषद् में वेदों को ईश्वरीय ज्ञान मानने का स्पष्ट प्रतिपादन इस प्रकार के शब्दों में है :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्निर्मूर्धा चक्षुषी चन्द्रसूर्यौ,
दिशः श्रोत्रे वाग् विवृताश्च वेदाः ॥ (मु० २।१।४)
तस्मादृचः सामयजूंषि दीक्षाः । (मु० २।१।६)

अर्थात् उस भगवान् का मस्तक मानो अग्नि है, सूर्य और चन्द्र उसके नेत्रों के समान हैं। दिशाएँ उसके कानों के तुल्य हैं। वेद मानो उसकी वाणी से निकले अर्थात् ईश्वरीय हैं। ताण्ड्य ब्राह्मण तथा तदन्तर्गत छान्दोग्योपनिषद् में छन्दों के नाम से वेदों की महिमा इन शब्दों में बताई गई है।

'देवा वै मृत्योर्बिभ्यतस्त्रयीं विद्यां प्राविशन् ते छन्दोभिरच्छादयन्, यदेभिरच्छादयन् तच्छन्दसां छन्दस्त्वम्। (छान्दोग्य० १।४।२)

अर्थात् देवों (सत्यनिष्ठ विद्वानों) ने मृत्यु से भयभीत होकर त्रयी विद्या (ज्ञान, कर्म, उपासना विद्या का प्रतिपादन करने वाले वेद) का आश्रय लिया। उन्होंने वेद मन्त्रों से अपने को आच्छादित कर लिया। इसलिए इन्हें छन्द के नाम से कहा जाता है। इससे भी ब्राह्मणों और उपनिषदों के लेखक की वेदों के विषय में अत्यधिक श्रद्धा सूचित होती है इसमें कोई सन्देह नहीं।

महाभारत में वेदों का महत्त्व

महाभारत में महर्षि वेद व्यास जी ने वेद को नित्य और ईश्वरकृत अनेक स्थानों पर बताया है और उनके अर्थ सहित अध्ययन पर बड़ा बल दिया है। उन्होंने यह भी कहा है कि ऋषियों तथा पदार्थों के नाम वेदों से ही लेकर रखे गये। महाभारत के निम्न श्लोक इस विषय में विवेष उल्लेखनीय हैं।

अनादिनिधना नित्या, वागुत्सृष्टा स्वयम्भुवा।
आदौ वेदमयी दिव्या, यतः सर्वाः प्रवृत्तयः॥
(म०भा० शान्तिपर्व अ० २३२।२४)

अर्थात् सृष्टि के प्रारम्भ में स्वयम्भू परमेश्वर ने वेदरूप नित्य दिव्य वाणी का प्रकाश किया, जिससे मनुष्यों की सारी प्रवृत्तियाँ होती हैं। यह **ऋग्वेद के सुप्रसिद्ध मन्त्र :**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तस्मै नूनमभिद्यवे वाचा विरूपनित्यया ।
वृष्णे चोदस्व सुष्टुतिम् ॥ (ऋ० ८।७।६६)

का मानो अनुवाद है, जिसमें वेदवाणी को नित्य और विविध विषयों का निरूपण वा प्रतिपादन करने वाली होने के कारण विरूपा कहा गया है। इसी अध्याय में आगे कहा है :

नानारूपं च भूतानां, कर्मणां च प्रवर्तनम् ।
वेदशब्देभ्य एवादौ, निर्मिमोते स ईश्वरः ॥
नामधेयादि ऋषीणां, याश्चवेदेषु दृष्टयः ।
शर्वर्यन्ते सुजातानां, तान्येवैभ्यो ददात्यजः ॥

(म० भा० शान्तिपर्व मोक्षधामपर्व अ० २३०।२५-२७)

अर्थात् ईश्वर ने वस्तुओं के नाम और कर्म वेदों के शब्दों से निर्माण किये। ऋषियों के नाम और ज्ञान भी प्रलय के अन्त अर्थात् सृष्टि के प्रारम्भ में वेदों के द्वारा दिये गये। वेदो के अर्थ सहित अध्ययन पर बल देते हुए महर्षि व्यास ने कहा है कि :

यो वेदे च शास्त्रे च, ग्रन्थधारणतत्परः ।
न च ग्रन्थार्थतत्त्वज्ञः, तस्यतद् धारणं वृथा ॥
भारं स वहते तस्य ग्रन्थस्यार्थं न वेत्ति यः ।
यस्तु ग्रन्थार्थतत्त्वज्ञो नास्य ग्रन्थागमो वृथा ॥

(म०भा० शान्तिपर्व मो०प०अ० ३०५।१३-१४)

अर्थात् जो वेद-शास्त्रों को केवल पढ़ लेता है किन्तु उनके अर्थ और तत्त्व को नहीं जानता उसका इस प्रकार उस-उस ग्रन्थ को धारण कर लेना या केवल पढ़ लेना भार रूप और निष्फलसा हो जाता है। अतः वेदादि शास्त्रों को अर्थ और तत्त्व सहित समझने का ही सबको प्रयत्न करना चाहिए।

दर्शन शास्त्रों में वेदों का महत्त्व

न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदान्त ये छः दर्शन शास्त्र हैं जिन्हें गौतम, कणाद, कपिल, पंतजलि, जैमिनि और वेद व्यास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋषियों ने बनाया। इन सब दर्शनों में वेदों के महत्त्व को स्पष्टतया स्वीकार किया गया है। उदाहरणार्थ, न्यायदर्शन के 'मन्त्रायुर्वेद प्रामाण्यवच्च तत्प्रामाण्यमाप्त प्रामाण्यात्'। (२।१।६७) इत्यादि सूत्रों में परम-आप्त परमेश्वर का वचन होने और असत्य, परस्पर विरोध और पुनरुक्ति आदि दोषों से रहित होने से वेद को परम प्रमाण सिद्ध किया गया है।

वैशेषिक शास्त्रकार कणाद मुनि ने :

तद्वचनादाम्नायस्य प्रामाण्यम्। (१।१।३)

इस सूत्र द्वारा परमेश्वर का वचन होने से आम्नाय अर्थात् वेद की प्रामाणिकता का प्रतिपादन किया है। सांख्यकार कपिल मुनि को भूल से कई आधुनिक विचारक नास्तिक समझते हैं किन्तु उन्होंने भी "निजशक्त्यभिव्यक्तेः स्वतःप्रामाण्यम्" इत्यादि सूत्रों द्वारा वेदों को ईश्वरीय शक्ति से अभिव्यक्त (प्रकट) होने के कारण स्वतः प्रमाण माना है। योगदर्शनकार पतञ्जलि मुनि ने—

स एष पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्। (समाधिपाद सूत्र २६)

इत्यादि में परमेश्वर को नित्य वेद ज्ञान देने के कारण सब पूर्वजों का भी आदि गुरु माना है।

वेदान्तशास्त्र के कर्ता वेदव्यास जी ने 'शास्त्रयोनित्वात्'। (१।१।३) तथा 'अतएव च नित्यत्वम्'। (१।३।२९) इत्यादि सूत्रों द्वारा परमेश्वर को ऋग्वेदादि रूप सर्वज्ञान भण्डार शास्त्र का कर्ता मानते हुए वेद की नित्यता का प्रतिपादन किया है।

'शास्त्रयोनित्वात्'। (१।१।३)

इस सूत्र के भाष्य में सुप्रसिद्ध दार्शनिक श्री शंकराचार्य जी ने जो लिखा है वह भी इस प्रसंग में महत्त्वपूर्ण होने के कारण उल्लेखनीय है। वे लिखते हैं :

ऋग्वेदादेः शास्त्रस्यानेकविद्यास्थानोपबृंहितस्य प्रदीपवत् सर्वार्थावद्योतिनः सर्वज्ञकल्पस्य योनिः कारणं ब्रह्म। नहीदृशस्यर्ग्वेदादिलक्षणस्य सर्वज्ञगुणान्वितस्य सर्वज्ञादन्यतः संभवोऽस्ति।

अर्थात् ऋग्वेदादि जो चार वेद हैं वे अनेक विद्याओं से युक्त हैं, सूर्य के समान सब सत्य अर्थों के प्रकाश करने वाले हैं, उनका बनाने वाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वज्ञत्वादि गुणों से युक्त परब्रह्म है क्योंकि सर्वज्ञ ब्रह्म से भिन्न कोई जीव सर्वज्ञ गुण युक्त इन वेदों को बना सके ऐसा संभव नहीं, इत्यादि ।

मीमांसा शास्त्र के कर्त्ता जैमिनि मुनि तो धर्म का लक्षण ही यह स्पष्ट करते हैं कि :

'चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः' (१।१।२)

अर्थात् जिसके लिए वेद की आज्ञा है वह धर्म और जो वेद-विरुद्ध हो वह अधर्म कहलाता है ।

इस प्रकार समस्त शास्त्र एक स्वर से वेदों की नित्यता और स्वतः प्रमाणता का प्रतिपादन करते हैं ।

ग्रेट ५—महात्मा गौतम बुद्ध के वेदों के महत्त्व विषक वचन

महात्मा गौतम बुद्ध को बहुत से पाश्चात्य और कई भारतीय विद्वान् वेदधर्म विरोधी नास्तिक मानते हैं किन्तु वस्तुतः वे एक आर्य सुधारक थे जिन्होंने अज्ञान और स्वार्थवश प्रचलित यज्ञों में पशुहिंसा, जन्ममूलक वर्ण-व्यवस्था वा जातिभेदादि कुप्रथाओं को दूर करने का प्रयत्न किया। उन्होंने वेदों की निन्दा नहीं की किन्तु उन लोगों की निन्दा की जो वेदों का नाम लेकर यज्ञों में पशुहिंसा तथा अन्य प्रकार से दुराचार में प्रवृत्त थे। वेदों और सच्चे धर्मात्मा वेदज्ञों की उन्होंने अनेक वचनों में प्रशंसा की है। उदाहरणार्थ, सुत्तनिपात २९२ में महात्मा गौतम बुद्ध ने कहा है :

विद्वां च वेदेहि समेच्च धम्मं ।
न उच्चावचं गच्छति भूरिपञ्यो ॥

इसका संस्कृत अनुवाद :

विद्वांश्च वेदैः समेत्य धर्मं ।
नोच्चावचं गच्छति भूरिप्रज्ञः ॥

अर्थात् जो विद्वान् वेदों के द्वारा धर्म का ज्ञान प्राप्त करता है। उसकी डांवाडोल अवस्था नहीं रहती ।

सुत्तनिपात श्लो० १०५९ में महात्मा बुद्ध की निम्न उक्ति पाली में पाई जाती है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यं ब्राह्मणं वेदगुं अभिजञ्ना,
अकिंचनं कामभवे असत्तं।
अद्धा हि सो ओघमिमं अतारि,
तिण्ण च पारं अखिलो अकंखो॥

इसका संस्कृत अनुवाद इस प्रकार है :

यं ब्राह्मणं वेदज्ञम् अभिज्ञातवान्
अकिंचनं कामभवे असक्तम्।
अद्धा हि स ओघमिमम् अतारीत्
तीर्णश्च पारम् अखिलः अकांक्षः॥

अर्थात् जिसने उस वेदज्ञ ब्राह्मण को जान लिया जिसके पास कुछ धन नहीं और जो सांसारिक कामनाओं में आसक्त नहीं, वह आकांक्षारहित सचमुच इस संसार-सागर से तर जाता है! क्या एक वेद-विरोधी नास्तिक के इस प्रकार के वचन हो सकते हैं? जो इस विषय में विस्तार से देखना चाहते हैं उन्हें लेखक की 'बौद्ध मत और वैदिक धर्म' (आर्यसमाज दीवानहाल, दिल्ली द्वारा प्रकाशित १ रु० ५० पैसे) तथा "Mahatma Buddha, an Arya Reformer" (आनन्द कुटीर ज्वालापुर उ० प्र० से प्राप्तव्य मूल्य १ रु० ७५ पै०) इन पुस्तकों को पढ़ना चाहिए।

६. सिख गुरुओं की वाणी में वेदों का महत्त्व (ग्रंट)

यद्यपि आजकल कई सिक्ख भाई वेदशास्त्र का महत्व नहीं मानते और अपने को आर्यों (हिन्दुओं) से सर्वथा पृथक् समझते हैं किन्तु सिक्ख मत के प्रवर्त्तक गुरु नानक जी तथा अन्य गुरुओं की वाणी में वेदों का महत्व अनेक स्थानों पर स्पष्टतया वर्णित है। उदाहरणार्थ, गुरुग्रन्थ साहेब के निम्नलिखित वचनों को देखना चाहिए—

१. ओंकार वेद निरमाये। (राग रामकली, महला १, ओंकार शब्द १) अर्थात् ईश्वर ने वेद बनाए।

२. हरि आज्ञा होए वेद, पाप पुन्य विचारिआ॥

(महला ५ शब्द १)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थात् ईश्वर की आज्ञा से वेद हुए जिससे मनुष्य पाप पुण्य का विचार कर सके।

३. सामवेद, ऋग्, यजुर्, अथर्वण,
ब्रह्म मुख माइया है त्रैगुण।
ताकी कीमत कीत कह न सकै,
को तिड बोले जिड बोलाइदा। (महला १ शब्द १७)

यहां भी चारों वेदों का नाम लेकर कहा है कि उनकी कीमत (महत्व) कोई भी नहीं बता सकता। वे अमूल्य व अनन्त हैं।

४. चार वेद चार खानी ॥ (महला ५ शब्द १७)

अर्थात् चार वेद चार खानों के समान (ज्ञान कोष) हैं।

५. वेद बखान कहहि इक कहिये।
ओह बेअन्त अन्न किन लहिये। (महला १० अ० ३)

अर्थात् वेदों की महिमा का क्या वर्णन किया जाये? वे बेअन्त हैं, उनका अन्त किस प्रकार पा सकते हैं?

६. दीवा बले अंधेरा जाई,
वेद पाठ मति पापा खाई।
उगवे सूरज न जापे चन्द,

अर्थात् वेद के ज्ञान से अज्ञान मिट जाता है और उनके पाठ से बुद्धि शुद्ध होकर पापों का नाश हो जाता है।

७. असंख ग्रन्थ मुखी वेद पाठ। (जपजी १७)

अर्थात् असंख्य ग्रन्थों के होते हुए भी वेद का पाठ सबसे मुख्य है।

८. वेद बखियान करत साधुजन,
भागहीन समझत नाहीं ॥ (टोडी महला ५ शब्द १७)

अर्थात् साधु-सज्जन वेद का व्याख्यान करते हैं किन्तु भाग्यहीन नीच मनुष्य कुछ समझता नही।

९. कहंत वेदा गुणन्त गुणिया,
सुणत बाला वह विधि प्रकारा।
दृढन्त सुविद्या हरि-हरि कृपाला ॥ (महला ५।१५)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थात् वेदों के पढ़ने से उत्तम विद्या भगवान् की कृपा से बढ़ती है।

इस पर भीं जो वेदशास्त्र की निन्दा करते और उन्हें असत्य समझते हैं उनके बारे में गुरु ग्रन्थ साहेब में उद्धृत भक्त कवि कबीर जी का निम्नलिखित वचन स्मरण रखने योग्य है–

'वेद कतेब कहहु मत झूठे, झूठा जो न विचारे।'

(प्रभाती बानी कबीर)

अर्थात् वेद शास्त्र को झूठा मत कहो। झूठा वह है जो विचार नहीं करता। विस्तारमय से अभी इतना ही पर्याप्त है।

७. सुप्रसिद्ध पारसी विद्वान् द्वारा वेद महिमा गान (ग्रेट)

सुप्रसिद्ध पारसी विद्वान् फर्दून दादा चान जी बी० एल० एल० बी० ने 'Philosophy of Zoroastrianism and Comparative Study of Religions' नामक अपने विद्वत्तापूर्ण ग्रन्थ में वेद के बिषय में लिखा है –

"The, Veda is a Book of Knowledge and Wisdom, Comprising the Book of nature, the Book of Religion, the Book of prayers, The Book of morals and so on. The word 'Veda' means wit, wisdom knowledge and truly the Veda is condensed wit, wisdom and knowledge."

(P. 100)

अर्थात् वेद ज्ञान की पुस्तक है, जिसमें प्रकृति, धर्म, प्रार्थना, सदाचार इत्यादि त्रिषयक पुस्तकें सम्मिलित हैं। वेद का अर्थ ज्ञान है और वास्तव में वेद में सारे ज्ञान विज्ञान का तत्व भरा हुआ है।

इस प्रकार इस पारसी विद्वान् ने वेदों को ज्ञान का विश्वकोष बताया है।

८. जैन आचार्य द्वारा वेद महिमा गान (ग्रेट)

आचार्य कुमुदेन्दु नामक जैन विद्वान् ने कर्णाटक भाषा में "भूवलय" नामक एक आश्चर्यकारक ग्रन्थ लिखा है जिसमें उन्होंने लिखा है लि ऋग्वेद ही अनादिनिधना आदिम भगवद् वाणी है। इसमें अनेक भाषायें निकलती हैं भगवान् का संदेश सभी के लिए एक-सा होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

९. अरब देश के विद्वान् लाबी वेदों का गुणगान

अखताब के पुत्र और तुर्फा के पौत्र लाबी नामक अरब वासी कवि ने जो मुहम्मद साहेब के जन्म के लगभग २४०० वर्ष पूर्व विद्यमान था, वेदों का गुणगान अरबी भाषा की एक कविता द्वारा किया जिसका हिन्दी भाषानुवाद निम्न है–

१. ऐ हिन्दुस्तान की धन्य भूमे ! तू आदर करने योग्य है क्योंकि तुझमें ही ईश्वर ने अपने सत्य ज्ञान का प्रकाश किया है।

२. ईश्वरीय ज्ञान रूप ये चारों पुस्तकें (वेद) हमारे मानसिक नेत्रों को किस आकर्षक और शीतल उषा की ज्योति को देते हैं। परमेश्वर ने हिन्दुस्ताम में अपने पैगम्बरों अर्थात् ऋषियों के हृदयों में इन चारो वेदों का प्रकाश किया।

३. और वह पृथ्वी पर रहने वाले सब जातियों को उपदेश देता है कि मैंने वेदों में जिस ज्ञान को प्रकाशित किया है उसको तुम अपने जीवनों में क्रियान्वित करो उनके अनुसार आचरण करो। निश्चय से परमेश्वर ने ही वेदों का ज्ञान दिया है।

४. साम और यजुर् वे खजाने हैं जिन्हें परमेश्वर ने दिया है। ऐ मेरे भाइयो ! इनका तुम आदर करो क्योंकि वे मुक्ति का शुभ सदेश देते हैं।

५. इन चारों में से शेष दो ऋक् और अथर्व हमें विश्वभ्रातृत्व का पाठ पढ़ाते हैं। ये दो ज्योति स्तम्भ हैं जो हमें लक्ष्य की ओर अपना मुंह मोड़ने की चेतावनी देते हैं।

अरबदेशीय कवि लाबी द्वारा वेदों के प्रति समर्पित यह श्रद्धांजलि स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य है।

१०. अनेक निष्पक्ष पाश्चात्त्य विद्वानों द्वारा वेद गौरव गान

यद्यपि अधिकतर पाश्चात्य लेखकों ने ईसाई मत की श्रेष्ठता दिखाने के लिए वेदों का निष्पक्ष भाव से अध्ययन नहीं किया तथापि ऋषि दयानन्द के वेद विषयक कार्य के पश्चात् अनेक ऐसे विद्वान् यूरोप और अमरीका में हुए जिन्होंने वेदों का अध्ययन निष्पक्ष भाव से करके उनकी महिमा का मुक्त कण्ठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से गान किया है। उनमें से कुछ का यहां उल्लेख करना उचित प्रतीत होता है।

डा० रसल वैलेस सबसे पहले मैं डार्विन के साथ ही प्राकृतिक जगत् में विकासवाद के आविष्कारक डा० रसेल वैलेस के सुप्रसिद्ध ग्रन्थ 'Social Environment and Moral Progress' से कुछ उद्धरण देना चाहता हूँ जो अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। वे लिखते हैं–

"In the earliest records, which have come down to us from the past, we find ample indications that accepted morality and the conduct resulting from these, were in no degree inferior to those which prevail today, though in somd respeets they differed from ours. The wonderful collection of hymns known as the Vedas is a vast system of religious teachings as pure and lofty as those of the finest portions of the Hebrew Scriptures. Its authors were fully our equals in their conception of the universe and the Deity expressed in the finest poetic language. (P. 11)

"In it (Veda) we find many of the essential teacbings of the most advanced religious thinkers." (P. 13)

"we must admit that the mind which conceived and expressed in appropriate language such ideas as are every where present in those Vedic hymns, could not have been inferior to those of the best of our religious teachers and poets, to our Milton, Shakespeare and Tennyson." (P. 14)

अर्थात् पुराने समय के जो लेख हमें इस समय मिलते हैं उनमें भी हमें इस बात के पर्याप्त निर्देश प्राप्त होते हैं कि उस समय के सदाचारादि विषयक विचार और व्यवहार हमारे से किसी रूप में भी कम कोटि के नहीं थे यद्यपि कई अंशों में वे हमसे भिन्न अवश्य थे।

वेद के नाम से प्रसिद्ध आश्चर्यजनक संहिता के अन्दर बाइबिल के अच्छे से अच्छे भाग के तुल्य पवित्र और ऊंची धार्मिक शिक्षाओं की एक पद्धति पाई जाती है। इसके लेखक संसार और सुन्दरतम कविता में प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईश्वर विषयक विचार में पूर्णतया हमारे समान थे । इनमें हम अत्यधिक उन्नत वा प्रगतिशील धार्मिक विचारकों की मुख्य शिक्षाओं को पाते हैं ।.........

हमें यह स्वीकार करना ही पड़ेगा कि जिस मन ने उन ऊंचे विचारों को ग्रहण किया और तदनुरूप उत्तम भाषा में प्रकट किया जो वेदों में सर्वत्र पाये जाते हैं, हमारे उच्चतम धार्मिक शिक्षकों और मिल्टन, शेक्सपियर तथा टेनीसन जैसे कवियों से किसी अवस्था में भी कम न था ।

इससे बढ़कर सामाजिक विकासवाद (Social Evolution Theory) का खण्डन क्या हो सकता है ? यदि वेदों की, जिनको प्रायः सभी पाश्चात्य विद्वान् संसार के पुस्तकालय में प्राचीनतम ग्रंथ प्रो० मैक्समूलर के सुप्रसिद्ध शब्दों में The oldest books in the library of mankind मानते है, शिक्षायें इतनी ऊंची और पवित्र हैं जितनी कि बाइबिल के अच्छे से अच्छे भागों को अथवा यदि ऋषि वर्तमान सुसभ्य जगत् के उच्चतम विचारकों और कवियों से कम न थे तो फिर सामाजिक विकास के लिए अवकाश कहां रह जाता है ? स्वयं भौतिक जगत् में विकासवाद के प्रवर्तकों में से एक वैज्ञानिक शिरोमणि का सामाजिक विकासवाद का इस प्रकार का निराकरण अत्यन्त महत्वपूर्ण है । इस सामाजिक विकासवाद के आधार पर जो ईश्वरीय ज्ञान की आवश्यकता से इन्कार करते हैं उनको अपना विचार बदलने को विवश होना पड़ेगा । यह बात डा० अल्फ्रेड रसेल वैलेस के ऊपरलिखित वाक्यों से स्पष्ट हो जाती है ।

११. ईसाई पादरी फिलिप द्वारा वेदों की ईश्वरीयता की स्वीकृति

रेवरेण्ड मोरिस फिलिप (Rev. Morris Philip) नामक ईसाई पादरी ने 'The Teachings of the Vedas' नामक ग्रन्थ में निम्न शब्दों में वेदों को प्रारम्भिक ईश्वरीय ज्ञान बताया है । वे लिखते हैं–

"We have pushed our enquiries as far back in time as the records would permit and we have found that the religious and speculative thought of the people was far purer, simpler and more rational at the farthest point we reached, than at

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

the nearest and the latest in the Vedic Age."

"The conclusion, therefore, is inevitable viz; that the development of religious thought in India has beee uniformly downwards and not upwards, deterioration and not evolution. We are justified therefore in concluding that the higher and purer concepts of Vedic Aryans were the result of a primitive Divine Revelation."

P 23)

इस लम्बे उदाहरण का तात्पर्य यह है कि हम अपनी खोज को समय की दृष्टि से इतना पीछे की ओर ले गये जितने की लेखादि सामग्री हमें मिल सकती थी और हमने पाया कि लोगों की धार्मिक और दार्शनिक विचारधारा सबसे पुराने समय में जहां तक हम पहुँच सके अधिकतम पवित्र, युक्तियुक्त और सरल थी। अपेक्षया वैदिक काल के भी हमारी दृष्टि से समीपतम और नवीनतम समय में।

इसलिए हमारे लिए यह परिणाम निकालना अनिवार्य है कि भारत में धार्मिक विचार का विकास नहीं किन्तु ह्रास ही हुआ है, उन्नति नहीं किन्तु अवनति हुई हुई है : हम यह परिणाम निकालने में न्याययुक्त हैं कि वैदिक आर्यों के उच्चतर और पवित्रतर ईश्वरादि विषयक विचार एक प्रारम्भिक ईश्वरीय ज्ञान के परिणाम थे।

१२. प्रो० हीरेन् नामक ईसाई विद्वान् का वेद विषयक लेख

प्रो० हीरेन् (Herren) नामक एक सुप्रसिद्ध अनुसन्धानकर्त्ता विद्वान् ऐतिहासिक ने वेदों के विषय में लिखा है कि—

"They (the Vedas) are without doubt the oldest works composed in Sanskrit, Even the most ancient Sanskrit works allude to the Vedas as already existing. The Vedas stand alone in their solitary splendour, standing as beacon of Divine Light for the onward march of humanity.

(Historical Researches Vol. 11 P. 127)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थात् इसमें सन्देह नहीं कि वेद संस्कृत के प्राचीनतम ग्रन्थ हैं। उपलभ्यमान सर्वाधिक प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों में भी उनकी विद्यमानता का स्पष्ट निर्देश पाया जाता है। वे मनुष्यमात्र की उन्नति के लिए अपनी अद्भुत ज्ञान में दिव्यप्रकाश स्तम्भ का काम देते हैं।

१३. लेग्रों देल्वाँ नामक फ्रेञ्च विद्वान् का मत

१४ जुलाई १८८४ को पेरिस में आयोजित International Literary Association अथवा अन्तराष्ट्रीय साहित्यकार संघ के सम्मुख निबन्ध पढ़ते हुए लेग्रो देल्वाँ (Mons Leon Delbos) नामक फ्रांस के सुप्रसिद्ध विद्वान् ने घोषणा की कि The Regveda is the most sub imc conception of the great high ways of humanity.

अर्थात् ऋग्वेद मनुष्य मात्र की उच्च प्रगति और आदर्श की उच्चतम कल्पना है।

१४. नोबल पुरस्कार विजेता मैटर्लिङ्क और वेदों का महत्त्व

लगभग डेढ़ लाख रुपये के नोबल पुरस्कार विजेता स्वीडन वासी श्री मैटर्लिङ्क ने अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक 'The Great Secret' में वेदों के प्रति अत्यधिक आदर का भाव दिखाया है। वेदों की कर्तव्यशास्त्रादि विषयक शिक्षाओं को उद्धृत करते हुए उसने लिखा है कि—

"Let us agree that this system of Ethics of which I have been unable to give more than the slightest survey, while the first ever known to man, is also the loftiest which he has ever practised" (The Great Secret P. 36)

अर्थात् हमें इस बात को स्वीकार करना चाहिए कि यह कर्तव्य शास्त्र विषयक प्रणाली जिसका मैंने अत्यन्त संक्षिप्त विवरण दिया है जो कि मनुष्य को ज्ञान प्रणालियों में सर्वप्रथम है साथ ही सब से अधिक उत्कृष्ट है जिसका मनुष्य ने कभी आचरण किया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राचीन परम्परा वा Primitive Tradition का निर्देश करते हुए मैटर्लिङ्क ने लिखा है कि—

"As for the primitive tradition, it is true that these affirmations and precepts are the most unlooked for the loftiest, the most admirable and the most plausible that mankind has hitherto known.

(P. 57)

अर्थात् प्राचीन प्रारम्भिक परम्परा के सम्बन्ध में यह सत्य है कि ये उक्तियां और आदेश अत्यन्त अविलोकित सर्वोत्कृष्ट, सर्वाधिक प्रशंसनीय और सबसे अधिक युक्तियुक्त हैं जिनका मनुष्यों ने अब तक ज्ञान प्राप्त किया है :

इस परम्परा का अनुसरण करते हुए मैटर्लिङ्क ने वेदों को ज्ञान का विशाल भण्डार माना है जिनको मानव सृष्टि के प्रारम्भ में ऋषियों पर प्रकाशित किया गया। उनके शब्द ये हैं This tradition attributes to the vast reservoir of the wisdom that somewhere took shape simultaneously with the origin of man... to more spiritual entities, to beings less entangled in matter.

('The Great Secret' by Materlink Prologue, P 6)–

सुप्रसिद्ध दार्शनिक मैटर्लिङ्क के इन विचारों से सामाजिक विकासवाद का भी पूर्णतया खण्डन हो जाता है क्योंकि यदि सबसे प्राचीन वेदों की कर्तव्यादि विषयक शिक्षाएँ सबसे अधिक उत्कृष्ट प्रशंसनीय और युक्ति-युक्त हैं, तो फिर सामाजिक विकासवाद के लिए कहाँ स्थान रह जाता है।

१५. अमेरिका के सुप्रसिद्ध विचारक थोरियो की वेदविषयक धारणा :

थोरियो नामक अमरीका के सुप्रसिद्ध विद्वान् लेखक ने वेदों के विषय में निम्न उद्गार प्रकट किये हैं :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"What extracts from the Vedas I have read fall on me like the light of a higher and purer luminary which describes a loftier course through a purer stratum—free from particulars, simple, universal; the Vedas contain a sensible account of God.' (quoted ohere from "Mother America" by Swami Omkar P. 9)

इसका भाव यह है कि मैंने वेदों के जो उद्धरण पढ़े हैं वे मुझ पर एक उच्च और पवित्र ज्योति-पुञ्ज के प्रकाश की तरह पड़ते हैं जो एक उत्कृष्ट मार्ग का वर्णन करता है। वेदों के उपदेश सरल देश वा जाति विशेष के इतिहास से रहित और सार्वभौम हैं तथा उनमें ईश्वर विषयक युक्तियुक्त विचार दिये गये हैं :

१६. आयर के डा० जेम्स कजिन्स की श्रद्धाञ्जलि

डा० जेम्स कजिन्स नामक आयर के सुप्रसिद्ध कवि, कलाकार और दार्शनिक कवि ने 'Path to Peace' अथवा शान्ति का मार्ग नामक पुस्तक में वैदिक आदर्श की उच्चता का वर्णण करते हुए लिखा है :

"On that (Vedic) ideal alone, with its inclusiveness which absorbs and annihilates the causes of antagonism, its sympathy which wins hatred away from itself it is possible to rear a new earth in the image and likeness of the eternal Heavens"

('Path to Peace' by Dr. James Cousins P. 60)

अर्थात् उस वैदिक आदर्श का अनुकरण करते हुए ही जो सार्वभौम होने के कारण विरोध के कारणों को विनष्ट करता है, यह संभव है कि पृथ्वी को फिर से स्वर्ग के समान सुखदायक बनाया जा सके।

डा० जेम्स स्वयं सपत्नीक इस वैदिक आदर्श से इतने प्रभावित हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि वे कुलपति जयराम नाम रखकर वैदिक आदर्शों के अनुसार अपने जीवन को बनाने का निरन्तर यत्न करते रहे।

१७. रूस के जगद्विख्यात ताल्स्ताय की वेदों पर श्रद्धा

रूस निवासी लियो ताल्स्ताय जगत्प्रसिद्ध विचारक और लेखक थे। अलेक्जेण्डर शिफ़मान नामक ताल्स्ताय संग्रहालय के अनुसन्धानकर्ता विद्वान् ने 'Leo Tolstoy and the Indian Epics' शीर्षक का जो लेख पत्र-पत्रिकाओं में छपवाया है उसके निम्नलिखित उद्धरणों से लियो बाल्स्ताय की वेदों पर श्रद्धा प्रकट होती है। शिफ़मान ने लिखा है।

"Leo Tolstoy was deeply interested in ancient Indian literature and its great epics. The themes of the Vedas were the first to attract his attention."

"Appreciating the profundity of the Vedas, Tolstoy gave particular attention to those cantos which deal with the problems of ethics. a subject which interested him deeply. He subscribed to the idea of human love which pervades the Veds, with their humanism and praise of peaceful labour. Tolstoy the artist was moreover delighted by the poetic treasures and the artistic imagery which distinguish those out-standing Indian epics"

"He (Tolstoy) ranked the Vedas and their later interpretions—the Upanishads—with those prefected works of world ard which have never failed to appeal to all nationalities in all epochs and which, therefore, represent true art"

"Tolsoty not only read the Vedas, but also spread their teachings in Russia. He included many of the sayings nf the Vedds and the Upanishads, in his collections, "Range of Reading 'Thoughts of wise men' and others."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन उद्धरणों का तात्पर्य यह है कि भारत के प्राचीन साहित्य और महाकाव्यों के प्रति लियो तालस्ताय गहरी दिलचस्पी रखते थे। वेदों की विषयवस्तु ने सर्वप्रथम उनका ध्यान आकृष्ट किया। तालस्ताय वेदों के गम्भीर ज्ञान पर मुग्ध थे। वे वेदों के उन भागों पर विशेष ध्यान देते थे जिनका सम्बन्ध आचारशास्त्र सम्बन्धी समस्याओं से हैं। यह एक ऐसा विषय था जिसमें उनकी प्रगाढ़ रुचि थी। वेदों में व्याप्त मानवीय प्रेम के सिद्धान्त के, मानववाद तथा शान्तिमय श्रम प्रशंशा के वे समर्थक थे। कलाकार तालस्ताय इन अग्रगण्य भारतीय रचनाओं की काव्यनिधि और कलात्मक उपमाओं पर आनन्द विभोर थे। वे वेदों तथा उनके बाद के भाष्य-उपनिषदों को विश्वकला की उन सर्वांगपूर्ण रचनाओं की कोटि में मानते थे जिन्होंने सभी युगों में समस्त जातियों का हृदय बरबस आकृष्ट किया है। इसलिए वे उन्हें सच्ची कला का प्रतीक मानते थे। तालस्ताय ने न केवल वेदो को पढ़ा; वरन् उनकी शिक्षाओं का रूप में प्रचार प्रसार भी किया। उन्होंने वेदों और उपनिषदों की अनेक सूक्तियों का संग्रह 'पठन विस्तार तथा बुद्धिमानों के विचार' शीर्षक से किया, इत्यादि। इस प्रकार वेदों की शिक्षाओं ने तालस्ताय जैसे जगद्विख्यात मनीषी को कैसे प्रभावित किया यह स्पष्टतया ज्ञात होता है।

मेरे लिए यह प्रसन्नता और गौरव की बात है कि तालस्ताय तक वेद विषयक शिक्षाओं को पहुँचाने का श्रेय, जैसे कि इस उपरिनिर्दिष्ट लेख में श्री शिफ़मान ने भी बताया है, गुरुकुल काङ्गड़ी के आचार्य और वैदिक मैगजीन के सम्पादक प्रो० रामदेव जी को है जो वैदिक मैगजीन नामक अपनी मासिक पत्रिका तालस्ताय के पास नियमित रूप से भेजते रहते थे और जो तालस्ताय के मित्र के रूप में उनके साथ-साथ पत्र-व्यवहार करते रहते थे।

१८. जे० मास्करो की सम्मति में वेद आत्मा के हिमालय के समान

श्री जे० मास्करो एम०ए० ने 'Himalayas of the Soul' नामक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक संग्रहात्मक पुस्तक का सम्पादन किया है। इसमें उन्होंने वेद, उपनिषद् और गीता को आत्मा के हिमालय के साथ उपमा देते हुए लिखा है—

"If a Bible of India were composed, if Sanskrit could find a group of translators with the same feeling for beauty of language and the same love for the Sacred texts in the original as the Bible has found in England, eternal treasures of old wisdom and poetry would enrich the times of today.

"Among those compositions, some of them living words before writing was introduced, the Vedas the Upanishads and the Bhagavad Gita would rise above the rest like Himalayas of the spirit of man."

अर्थात् यदि भारत की कोई बाइबिल संकलित की जाती, यदि संस्कृत भाषा के लिए ऐसे ही श्रद्धालु और योग्य अनुवादकों का वर्ग मिल जाता जिनका ध्यान भाषा-सौन्दर्य पर उतना होता और मूल के पवित्र मन्त्रों के साथ वैसा ही प्रेम होता जैसा कि इंग्लैण्ड में बाइबिल को प्राप्त हो गया तो प्राचीन बुद्धिमत्ता व ज्ञान तथा कविता के नित्य कोषों से वर्तमान युग समृद्ध बन जाता।

उक्त रचनाओं में से कई ऐसी हैं जो जीवित जाग्रत् शब्द बन चुके पूर्व इसके कि लेख का प्रयोग प्रारम्भ होता। इनमें से वेद, उपनिषदें और भगवद् गीता मानवीय आत्मा के हिमालय के समान शेष सबसे ऊपर उठे हुए ग्रंथ होंगे।

१९. मि ब्राऊन नामक अंग्रेज लेखक की श्रद्धाञ्जलि :

मि० डी० (W. D. Brown) नामक एक अंग्रेज विद्वान् ने अपने 'Superioriy of the Vedic Religion' (वैदिक धर्म की श्रेष्ठता) नामक ग्रन्थ में वैदिक धर्म के विषय में जो लिखा है वह स्वर्णाक्षरों में उल्लेख करने योग्य है। वे लिखते हैं :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'It (Vedic Religion) recognises but one God. it is a thoroughly scientific religion where religion and science meet hand in hand. Here theology is based upon science and philosophy.'

अर्थात् वैदिक धर्म केवल एक ईश्वर का प्रतिपादन करता है। यह एक पूर्णतया वैज्ञानिक धर्म है जहाँ धर्म और विज्ञान हाथ में हाथ मिलाकर चलते हैं। यहां धार्मिक सिद्धान्त विज्ञान और फ़िलासफ़ी पर अवलम्बित हैं।

२०. शोपनहार के वेदमूलक उपनिषद् विषयक वचन :

जर्मनी के सुप्रसिद्ध दार्शनिक शोपनहार ने ईशोपनिषद् के विषय में (जो यजुर्वेद काण्वशाखा का अन्तिम अध्याय है) निम्न उद्‌गार प्रकट किये थे। शोपनहार जैसे निराशावादी दार्शनिक की लेखनी से निकले हुए शब्द वस्तुतः अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। उसने लिखा :

'In the whole world, there is no study so beneficial and elevating as the Upanishad. It has been the solace of my life, It will be the solace of my death.'

अर्थात् सारे संसार में कोई इतनी लाभदायक और ऊँचा उटाने वाली पुस्तक नहीं जितनी कि उपनिषद्। यह मेरे जीवन में शान्तिदायक रही है और मृत्यु के समय भी मुझे शान्ति देने वाली होगी।

वेदों के महत्त्व के कारण

इस प्रकार मैंने देश-विदेश के अनेक सुप्रसिद्ध विद्वानों और विचारकों ने वेदों की महिमा का जो गान किया है उसका निर्देश पाठकों के परिचय तथा लाभार्थ किया है। वेदों का इतना महत्त्व क्यों है इसका उत्तर भी ऊपर उद्धृत देश-विदेश के विद्वानों की सम्मतियों से बहुत कुछ मिल जाता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं० विश्वनाथ स्मृति संग्रह

पुस्तकालय गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय

8153

तथापि कुछ विशेष कारणों का संक्षेप से फिर निर्देश कर देना अप्रासङ्गिक न होगा विशेषतः उनके लिए जो दूसरों की सम्मतियों पर निर्भर न रह कर स्वयं इसके महत्व के कारण जानना चाहते हैं।

२१. महत्व का पहला कारण : ज्ञान, कर्म, उपासना का समन्वय :

(१) पहला प्रधान कारण वेदों के महत्व का यह है कि इनमें ज्ञान, कर्म और उपासना (भक्ति) का सुन्दर मेल है। केवल ज्ञान, केवल कर्म और केवल भक्ति से मुक्ति की प्राप्ति नहीं हो सकती। तीनों के समुच्चय से ही मोक्ष व परमात्मा प्राप्त होता है यह वैदिक धर्म की शिक्षा है। श्रद्धा और मेधा (शुद्ध बुद्धि व तर्क) का सुन्दर मेल वैदिक धर्म सिखाता है जहां वेद हमें-

श्रद्धां प्रातर्हवामहे श्रद्धां मध्यन्दिनं परि।
श्रधाँ सूर्यस्य निम्रुचि श्रद्धे श्रद्धापयेह नः॥ (ऋ०१०-१०५-५)

इत्यादि मन्त्रों द्वारा प्रातः मध्यान्ह और सूर्यास्त के समय श्रद्धा को धारण करने और जीवन को श्रद्धामय बताने का उपदेश करते हैं वहाँ साथ ही हमें मेधा व शुद्ध बुद्धि को भी हर समय धारण करने का उपदेश देते हैं।

मेधां सायं मेधां प्रातर्मेधां मध्यन्दिनं परि।
मेधां सूर्यस्य रश्मिभिर्वचसा वेशयामहे॥ (अ० ६।१०८।५)

इत्यादि मन्त्र इस विषय में स्पष्ट हैं। प्रातः मध्यान्ह, साय सूर्य की किरणों के साथ मेधा अथवा शुद्ध बुद्धि द्वारा प्रेरित हों, यह भाव हैं। वैदिक धर्म की श्रद्धा अन्धविश्वास नहीं है। किन्तु उसका शब्दार्थ ही श्रत् धा अर्थात् सत्य का धारण करना है। शुद्ध बुद्धि व तर्क द्वारा सत्य के स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करके उसे सम्पूर्ण अपने अन्दर धारण करना, कठिन से कठिन आपत्तियों और प्रलोभनों के आने पर भी उसे न छोड़ना यही श्रद्धा है। वेदोक्त धर्म इस प्रकार श्रद्धा और मेधा (शुद्ध बुद्धि व तर्क) के मेल का उपदेश देता तथा इसी इसी के लिए प्रार्थना करना सिखाता है।

अग्नये समिधमाहार्ष बृहते जातवेदसे।
स मे श्रद्धां च मेधां च जातवेदाः प्रयच्छतु॥ (अ० १९।६४।१)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इत्यादि मन्त्रों का यही तात्पर्य है।

"मूर्धानमस्य संसीव्यथर्वा हृदयं च यत्।" (अथर्व० १०।२।२६) इत्यादि मन्त्रों द्वारा ज्ञानी के लिए मस्तिष्क (दिमाग) और हृदय (दिल) को सी कर काम करने का उपदेश देते हैं जो अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अन्य मतमतांतरों वाले प्रायः कहते हैं कि "मजहब की बातों में अकल का दखल नहीं।" धर्म के विषय मे तर्क करने को नास्तिकता का चिन्ह समझा जाता और इसे बुरा समझा जाता है, केवल विश्वास व ईमान (FAITH) पर बल दिया जाता है जिसका परिणाम मरियम कुमारी से ईसा की उत्पत्ति, ४ रोटी के टुकड़ों से हजारों आदमियों का पेट भरना, ईसा मसीह का पानी को शराब बना देना, मुर्दों को जीवित कर देना, ईसा का तीसरे दिन कब्र में से निकल पड़ना जैसी प्रकृति-नियम-विरुद्ध असम्भव बातों को मानना हो जाता है किन्तु वेदोक्त धर्म इस प्रकार की बातों को नहीं मानता। इसकी यह विशेषता है कि यह प्रत्येक बात में बुद्धि और तर्क को काम में लाने का उपदेश देता है।

ग्रेट २२. महत्त्व का दूसरा कारण : कर्तव्य का प्रतिपादन

(२) वेदों के महत्व का दूसरा मुख्य कारण यह है कि उनमें मनुष्य के वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय, सब प्रकार के कर्तव्यों का बड़ी उत्तमता से प्रतिपादन किया गया है। इनमें से किसी की भी उपेक्षा नहीं की गई। मैंने अपनी "वैदिक कर्तव्यशास्त्र" नामक गुरुकुल काङ्गड़ी विश्वविद्यालय से प्रकाशित पुस्तक में इन कर्तव्यों का सप्रमाण निरूपण किया है जिसे पाठक वहां देख सकते हैं।

ग्रेट २३. महत्त्व का तीसरा कारण : समविकास

(३) वेदों के महत्व का तीसरा प्रधान कारण यह है कि उनमें शारीरिक मानसिक और आत्मिक सब शक्तियों का समविकास ही उन्नति का मूलमन्त्र है।

मनस्त आप्यायतां वाक् त आप्यायतां प्राणस्त आप्यायतां
चक्षुस्त आप्यायतां श्रोत्रं त आप्यायताम् ॥ (य० ६।१५)
वाङ्म आसन् नसोः प्राणश्चक्षुरक्ष्णोः श्रोत्रं कर्णयोः।
अपलिताः केशा अशोणा दन्ता बहु बाह्वोर्बलम् ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊर्वोरोजो जङ्घयोर्जबः पादयोः प्रतिष्ठा अरिष्टानि मे सर्वात्मा
निभृष्टः ।। (अथर्व० १९।६०।१,२)

इत्यादि मन्त्रों में इसी शारीरिक, मानसिक, आत्मिक शक्तियों के समविकास का प्रतिपादन और तदर्थ प्रार्थनादि का उपदेश है और इसे ही शिक्षा का प्रधान उद्देश्य बतलाया गया है।

ग्रेट २४. महत्त्व का चौथा कारण : मध्यमार्ग और समन्वय

(४) वेदों के महत्व का चतुर्थ कारण उनमें मध्यमार्ग का प्रतिपादन तथा उनके समन्वयात्मक उपदेश हैं। संसार में प्रायः देखा जाता है कि मनुष्य मध्य मार्ग का अवलम्बन न करके किसी न किसी पराकाष्ठा (**Extreme**) पर तुल जाते हैं। उदाहरणार्थ, कई पुरुष ऐसे हैं जो केवल वैयक्तिक उन्नति से ही संतुष्ट रहते हैं और सामाजिक उन्नति की ओर बिलकुल ध्यान नहीं देते। दूसरे कई ऐसे मनुष्य हैं जों पर्याप्त रूप से अपनी शारीरिक, मानसिक, आत्मिक शक्तियों को विकसित करने का प्रयत्न न करके केवल दूसरों की उन्नति के विचार में ही तत्पर रहते हैं। वास्तव में देखा जाये तो ये दोनों ही आवश्यक हैं। यजुर्वेद के ४० वें अध्याय में सम्भूति और असम्भूति पदों से आधिभौतिक दृष्टि से सामाजिक और वैयक्तिक भाव का वर्णन करते हुए कहा कि–

अन्धन्तमः प्रविशन्ति येऽसम्भूतिमुपासते ।
ततो भूय इव ते तमो य उ सम्भूत्यां रताः ।। (यजु० ४०-९)

अर्थात् जो केवल असम्भूति–वैयक्तिक उन्नति के अन्दर मग्न रहते हैं वे अन्धकार को जाते हैं इसमें सन्देह नहीं, किन्तु जो वैयक्तिक उन्नति की ओर ध्यान न देकर केबल सामाजिक उन्नति में तत्पर रहते हैं वे उससे भी घने अन्धेरे में जाते हैं। इसलिए वेद असम्भूति और सम्भूति अर्थात वैयक्तिक और सामाजिक उन्नति दोनो की ओर ध्यान देने का आदेश देते हैं। वेदोक्त वर्णाश्रम व्यवस्था में व्यष्टिवाद और समष्टिवाद दोनों का अद्भुत सामञ्जस्य पाया जाता है। इसी प्रकार एक तरफ ऐसे लोग और सम्प्रदाय हैं जो भोग को ही जीवन का ध्येय समझते हैं और चार्वाकों के समान–

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

815

यावज्जीवेत् सुखं जीवेत्, ऋणंकृत्वा घृतं पिवेत् ।
भस्मीभूतस्य देहस्य, पुनरागमनं कुतः ॥

अथवा यूरोप के एपीक्यूरियनो Epicureans की तरह Eat, drink and be merry, Because tomorrow we may die' अर्थात् खाओ पीओ मौज उड़ाओ क्योंकि हो सकता है कि कल ही मर जायें, जब तक जीओ मौज से जीओ। अपने पास न हो तो ऋण लेकर भी घी आदि का पान करो। एक बार जब शरीर भस्म हो गया तो फिर कोई नहीं आता अर्थात् आत्मा जैसे नित्य पदार्थ की कोई सत्ता नहीं'-इस प्रकार का प्रचार करते हैं। यूरोप के भौतिकवादियों (Materialists) की भी गणना इनमें हो सकती हैं।

दूसरी ओर नवीन वेदान्ती, बौद्ध और ईसाई मत जैसे सम्प्रदाय हैं जो त्याग ही त्याग का उपदेश देते हैं, जो काञ्चन व धन को सब अनर्थ का मूल मानते हुए, उसकी निन्दा करते हुए नहीं थकते और जो ईसा मसीह के समान यहां तक कह देते हैं कि It is easier for a camel to enter into the eye of a needle than for a rich man to enter into the Kingdom of God.' (Matc 23. 17)

अर्थात यह अधिक सुगम है कि एक ऊंट सुई की नोक में से निकल जाये अपेक्षा इसके कि एक धनी आदमी परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर सके।

किन्तु वेदों की शिक्षा इस विषय में भोग और त्याग के समन्वय की है जिसे–

ईशावास्यमिदं सर्वं, यत् किं च जगत्याँ जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मागृधः कस्य स्विद्धनम् ॥ (यजु० ४०।२)

इन उत्तम शब्दों में दिया गया है जिसका स्पष्ट अर्थ है कि परमेश्वर संसार की सब वस्तुओं में व्यापक है इसलिए उसकी दी हुई वस्तुओं का तुम त्याग भावना पूर्वक भोग करो। लोभ मत करो। इस बात का विचार करो कि यह धन जिसको तुम अपना समझकर अभिमान करते हो किसका है ? यह वस्तुतः प्रजापति परमेश्वर का ही है। परोपकार के कार्यों में इस धन का अधिक से अधिक उपयोग करते हुए तुम आवश्यकतानुसार ईश्वर प्रदत्त सांसारिक वस्तुओं का उचित उपभोग करो, इसमें कोई पाप नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इससे बढ़कर अधिक उपयोगी और व्यावहारिक शिक्षा क्या हो सकती है ? पूंजीवाद और साम्यवाद आदि वादों का उचित समन्वय इसी शिक्षा के द्वारा ही सम्भव है अन्यथा नहीं।

ग्रेट २५. महत्व का पांचवा कारण : तर्क और विज्ञान

(५) वेदों के महत्व का पंचम कारण उनकी शिक्षाओं का तर्क और विज्ञान सम्मत होना है। इग्लैंड के मनीषी डब्लू० डी० ब्राऊन के इन स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य वाक्यों को मैं पहले उद्धृत कर ही चुका हूँ कि- 'Vedic Religion is a thoroughly scientific religion where religion and science meet hand in hand. Here theology is based upon Science and philosophy.'

अर्थात वैदिक धर्म एक पूर्णतया वैज्ञानिक धर्म है जहां धर्म और विज्ञान हाथ में हाथ मिलाकर चलते हैं। यहां धार्मिक सिद्धांत विज्ञान और फिलासफी पर अवलम्बित है।

यह वस्तुत: सत्य है। वेदों में न केवल धर्म का मूल है किन्तु विज्ञान का भी मूल है। इस बात को महर्षि दयानन्द जी ने अपने वेद-भाष्यों में दिखाया, श्री अरविन्द जी जैसे जगद्विख्यात योगी और मनीषी ने महर्षि दयानन्द के इस विचार का इन शब्दों में समर्थन किया There is nothing fantastic in Dayananda's idea that Veda contains truth of science as well as truth of religion. I will even add my own conviction that Veda contains the other truths of a science the modern world does not at all possess and in that case, Dayananda has rathe understated than overstated the depth and range of the Vedic wisdom

('Dayananda and the Veda' by Shri Arabindo)

अर्थात ऋषि दयानन्द की इस धारणा में कि वेद में धर्म और विज्ञान दोनों की सच्चाइयां पाई जाती हैं कोई उपहासास्पद व कल्पित बात नहीं हैं। मैं इसके साथ अपनी धारणा जोडना चाहता हूँ कि वेदों में एक दूसरे विज्ञान की सच्चाइयां भी विद्यमान हैं जिनका आधुनिक जगत् को किञ्चिन्मात्र भी ज्ञान नहीं है और ऐसी अवस्था में ऋषि दयानन्द ने वैदिक ज्ञान की गम्भीरता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के विषय में अतिविविध विद्याओं का मूल किस प्रकार पाया जाता है। इस बात को जो विस्तार से जानना चाहते हैं उन्हें महर्षि दयानन्द के भाष्यों के अतिरिक्त निम्न पुस्तकों का अनुशीलन अवश्य करना चाहिए। बंगाल की रायल एशियाटिक सोसाइटी के सदस्य और निरुक्तालोचनम्, ऐतेरयालोचनम् आदि अनेक ग्रन्थों के विद्वान लेखक पं० सत्यव्रत जी सामश्रमी कृत त्रयी-परिचय, त्रयीचतुष्टय आदि— इसमें उन्होंने अनेक मन्त्रों की विज्ञानपरक व्याख्या की है।

महाराष्ट्र के विद्वान श्र नारायण पावगी कृत 'The Vedlc Fathers of Geology' इस ग्रन्थ की भूमिका में उन्होंने लिखा है कि–

"I may take this opportunity to remind the reader, without fear of contradiction that the Vedas contain many things not yet konwn to any body as they form a mine of inexhaustible literary wealth, that has ouly partially been opened and has still remained un-explored."

('The Vedlc Fathers of Geology' Introduction Pvi)

मैं बिना किसी विरोध के भय के पाठकों को याद कराना चाहता हूँ कि वेदों में बहुत सी ऐसी बातें पाई जाती हैं जिनका अभी तक किसी को ज्ञान नहीं क्योंकि वे उस साहित्यिक धन की अक्षय्य खान हैं जिसका अभी थोड़ा सा अंश ही प्रकट हुआ है और जो अभी तक अज्ञात ही पड़ा है।

श्री पावकी के 'Self Governmant in Ancient India—Vedic and Post Vedic तथा 'Vedic India'—Mother of Parliaments' नामक ग्रन्थ भी पढ़ने योग्य हैं जिनमें उन्होंने राज्य और प्रजातन्त्र शासन पद्धति का मूल वैदिक भारत को बताते हुए वेदों के विषय में लिखा है कि–

"The Veda is the fountain head of knowledge, the prime source of inspiration, nay, the grand repository of pithy passages of Divine Wisdom and even Eternal Truths."

(Vedic India P. 136)

अर्थात वेद सम्पूर्ण ज्ञान का आदि स्रोत, ईश्वरीय ज्ञान का प्रधान आधार, इतना ही नहीं, बल्कि दिव्य बुद्धि और नित्य सत्यमय वाक्यों का महान् भण्डार है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीव विज्ञान का Biology का मूल वेदों में किस तरह पाया जाता है इसको जानने के लिए पाठक 'The Vedic Gods—as Figures of Biology' by **Dr. V. G. Rele L. M. F. C. P. S.** नामक पुस्तक को पढ़ें।

भौतिकी और रसायन-शास्त्र का मूल वेदों में जो जानना चाहते हैं उन्हें श्री पन्यम् नारायण गौण एम० ए०, बी० एस० सी० रचित Introductton to the Meassage of the 20th Century' नामक पुस्तक विशेष रूप से पढ़नी चाहिए जिसके विषय का निर्देश करते हुए लेखक ने लिखा है– 'Proving that the Vedas are treatise on the exact Sciences.'

अर्थात् इस पुस्तक में सिद्ध किया गया है कि वेद शुद्ध विज्ञानों के ग्रन्थ हैं। ऋग्वेद और यजुर्वेद के विषय में वैज्ञानिकों ने विचार करते हुए इस ग्रन्थ के लेखक ने लिखा है कि--

"The Rigveda deals with the theoremo and experiments. While the process of preparing the reagents and apparatus is recorded in the Yajur Veda which is in effect, a laboratory guide."

अर्थात् ऋग्वेद वैज्ञानिक सिद्धांतों और परीक्षणों का निरुपण करता है। जबकि उनके साधनों और उपकरणों के तैयार करने की प्रक्रिया यजुर्वेद मे पाई जाती है जो परिणाम स्वरूप एक परीक्षणशाला मार्गदर्शक है।

इनके अतिरिक्त श्री पं० प्रियरत्न जी आर्य (अब स्वा० ब्रह्ममुनि जी परिव्राजक नाम से प्रसिद्ध हैं) कृत 'वेदों में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां' और 'बृहद् विमानशास्त्र' (दोनों सार्वदेशिक सभा दिल्ली द्वारा प्रकाशित) श्री हंस-राज कृत 'The Sciences in the Vedas,' पं० बलराम शर्मा कृत 'विद्याओं का आदि स्रोत' (प्रकाशक– मुंशीराम मनोहरलाल, नई सड़क, दिल्ली), श्रुतिप्रकाश, पुस्तकालय लुधियाना द्वारा प्रकाशित, वेदों के परम भक्त श्री दीवान रामनाथ जी काश्यप द्वारा स्व० श्री पं० जयदेव जी शर्मा विद्यामार्तण्ड के वेदों के भाषानुवाद के आधार पर संकलित वेदों में विज्ञान २ खण्ड अथवा 'Science in the Vedas' No. 1-2 (जिसमें पण्डित जयदेव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृत वेद मन्त्रों के विज्ञान विषयक हिन्दी अनुवाद का अंग्रेजी अनुवाद भी दिया गया है) जोधपुर के श्री पन्नालाल परिहार B. A. L. L. B. कृत 'Material Sciences in the Vedas' आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री कृत 'Sciences in the Vedas' इत्यादि पुस्तकें भी वेदों में विज्ञान की दृष्टि से पढ़ने योग्य हैं।

२६. वेद और विज्ञान पर कुछ पाश्चात्य विद्वान् ओट

वेद में विज्ञान के सम्बन्ध में इंगलैंड के मि० डब्लू० डी० ब्राउन की सम्मति मैं पहले उद्धृत कर चुका हूँ। जैकोलियत नामक फ्रांस देशीय विद्वान ने, जो चन्द्रनगर (फ्रेंच राज्यान्तर्गत भारतीय प्रदेश) में अनेक वर्षों तक चीफ जस्टिस रहे थे, अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक The Bible in India में ईश्वरीय ज्ञान माने जाने वाले विविध मत-मतान्तरों के ग्रन्थों की वेदों के साथ सृष्ट्युत्पत्ति के विषय में तुलनात्मक विवेचन करते हुए बड़े आश्चर्य के साथ लिखा-

"Astonishing fact ! The Hindu Revelation (Veda) is of all Revelsations the only one whose ideas are in perfect harmouy with modern science, as it proclaims the slow and gradual formation of the world."

('The Bible in India' by Jacolliot Vol. II Chap.)

अर्थात् कितनी आश्चर्यजनक सच्चाई है। हिन्दुओं का ईश्वरीय ज्ञान (वेद) ही जो लोकों की मन्द और क्रमिक रचना बतलाता है सब ईश्वरीय ज्ञानों में एक ऐसा है जिसकी कल्पनायें आधुनिक विज्ञान के साथ पूर्ण रूप से मिलती हैं। (भारत में बाइबल पं० सन्तराम जी कृत उक्त पुस्तक का अनुवाद द्वितीय भाग अ० १ पृ० २४६)

अमरीका की विदुषी महिला मिसेज व्हीलर विल्लौक्स (Mrs, Wheeler Willox) ने इस विषय में जो लिखा है उसका भी इस विषय में उल्लेख कर देना पाठकों के परिचयार्थ उचित प्रतीत होता है ताकि हम पर पक्षपात का दोषारोपण न किया जा सके। उस विदुषी देवी ने कहा--

"We have all heard and read about the ancient religion of India. It is the land of the great Veda—the most remcrksble

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

works containing not only religious ideas for a perfect life but also facts which all the science has since proved true. Electriciy Radium, Electrons, Airships all seem to be known to the seers who found the Vedas."

अर्थात् हमने प्राचीन भारत के धर्म के विषय में सुना और पढ़ा है। यह उन महान् वेदों की भूमि है जिसमें न केवल पूर्ण जीवन के लिए उपयोगी धार्मिक तत्व बताये गये हैं बल्कि उन तथ्यों का भी प्रतिपादन किया गया है जिन्हें समस्त विज्ञानों ने सत्य प्रमाणित किया है। बिजली, रेडियम, एलेक्ट्रन्स विमान व हवाई जहाज आदि सब चीजें वेदों के द्रष्टा ऋषियों को ज्ञात प्रतीत होती हैं।

२७. ईसाइयो द्वारा वैज्ञानिकों पर अत्याचार

ईसाई मत इस्लाम आदि में अनेक बुद्धि, प्राकृतिक नियम तथा विज्ञान विरुद्ध बातें पाई जाती हैं जिनके कारण इन मतों के नेताओं की ओर से अनेक दार्शनिकों, उत्तम विचारकों तथा वैज्ञानिकों पर बड़े-बड़े भयंकर अत्याचार किये गये जैसे कि विलियम ड्रेपर एम० ए० एल० एल० डी० कृत 'The History of the Conflict bet ween Science and Religion' में अनेक उदाहरणों का निर्देश इस प्रसंग में पर्याप्त होगा।

(१) यूनान देश की अपने समय की प्रसिद्ध दार्शनिक महिला हिपेशिया को जो अफलातून (Plato) और अरस्तू (Aristotle) के सिद्धाँतों का प्रचार करती थी बिशप् साइरिल् की आज्ञा से एकदम नग्न कर दिया गया और खुले बाजार पत्थरों की मार से उसकी जान निकाल दी गई।

(२) एरियस नामक अलेक्जण्ड्रिया के दार्शनिक पर इस विचार के प्रकट करने पर कि 'पिता और पुत्र की आयु समान नहीं हो सकती' जिसका निर्देश ईसा मसीह और पवित्र पिता या Holy Father की ओर था, ईसाइयों की कौंसिल की ओर से भीषण अत्याचार किये गये और उसके इस विचार की घोर निन्दा की गई।

(४) नेस्टर नामक ऐण्टियोक के पादरी को यह युक्तियुक्त विचार प्रकट करने पर कि ईश्वर की कोई माता नहीं हो सकती (जिसका निर्देश ईसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मसीह को ईश्वर मानते हुए उसकी माता मरियम को मानने के ईसाई सिद्धांत की ओर ओर था) देश निकाला दे दिया गया।

(४) पैलेगियस नामक एक अन्य यूनानी देशीय दार्शनिक को उसके विचार प्रकट करने पर कि जगत् में मृत्यु आदम के पाप के फल रूप नहीं हो सकती (जैसे कि Original Sin के सिद्धांत के अनुसार ईसाई मानते हैं) सेण्ट आगस्टाइन की प्रेरणा से उस समय के ईसाई सम्राट् ने देश निकाला दे दिया और उसकी सारी सम्पत्ति जब्त कर ली।

(५) गैलीलियो नामक प्रसिद्ध वैज्ञानिक को इस बात का प्रचार करने और पुस्तक द्वारा प्रकट करने पर कि पृथ्वी गोल है और वह सूर्य के चारों ओर घूमती है, पोप की अध्यक्षता में Inquisition Court अथवा धर्म-निर्णायक समिति ने १० वर्ष के कठोर कारावास का दण्ड दिया और यह निर्णय इस सिद्धान्त के सम्बन्ध में प्रकाशित किया कि—

"The first proposition that the sun is the centre and does not revolve around the earth is foolish, absurd, false in theology and heretical, because expressly contrary to the Holy Scriptures."

अर्थात गैलीलियो द्वारा प्रतिपादित यह विचार कि सूर्य केन्द्र है और वह पृथ्वी के चारों ओर नहीं घूमता मूर्खतापूर्ण और. वाहियात मत सिद्धांत की दृष्टि से एकदम मिथ्या है क्योंकि यह हमारे धर्मग्रन्थ बाइबल की शिक्षा के सर्वथा विरुद्ध है।

"And the second proposition that the earth is not the centre but revolves about the sun is absurd, false in philosophy and from a theological point of view at least opposed to the true faith."

दूसरा विचार कि पृथ्वी केन्द्र नहीं प्रत्युत सूर्य के चारों ओर प्रदक्षिणा करती है असंगत, फिलासफी के दृष्टिकोण से असत्य और कम से कम धर्म सिद्धांत की दृष्टि से सच्चे धर्म के सर्वथा विरुद्ध है।

इसीलिए वैज्ञानिक सिद्धांत के अनुसार पृथ्वी को गोल बताने वाले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गैलीलियो पर बड़े-बड़े अत्याचार किये गये। उसे १० वर्ष की कठिन सजा दी गई जिसके परिणामस्वरूप जेल में ही उसकी मृत्यु हो गई। ब्रूनो नामक एक दूसरे वैज्ञानिक के विरुद्ध भी इसी तरह की कार्यवाही की गई क्योंकि वह पृथ्वी को गोल बताता और यह सिद्ध करता कि अनेक लोक लोकान्तर हैं। उसे फरवरी १६०० ई० को जीवित अवस्था में ही तैल छिड़क कर जला दिया गया।

ऐसे ही अत्याचार अनेक दार्शनिकों और वैज्ञानिकों पर किये गये।

२८. महत्त्व का छठा कारण— एकेश्वरवाद

(६) वेदों के महत्व का षष्ठ कारण उनमें विशुद्ध एकेश्वर का प्रतिपादन है। वेदों में अग्नि, इन्द्र, मित्र, वरुण यम आदि नामों से प्रधानतया उस एक परमेश्वर का ही प्रतिपादन किया गया।

एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः ॥

(ऋ० १।१६४।४६)

यो देवानां नामधा एक एव ॥ (ऋ १०।८२।३)

इत्यादि में स्पष्ट बताया गया है जिनका तात्पर्य यह है कि ज्ञानी लोग उस एक परमेश्वर को ही उसके अनेक गुणों को सूचित करने के लिए अनेक नामों से पुकारते हैं। देवों के इन नामों को धारण करने वाला वह एक ही पर-श्वर है।

द्यावाभूमी जनयन् देव एकः ॥ (ऋ० १०।८१।३)

द्युलोक (आकाश) पृथ्वी आदि लोकों का उत्पादक वह एक ही देव है।

एक इद् राजा जगतो बभूव ॥ (ऋ० १०।१२१।४)

परमेश्वर ही सारे जगत् का एक राजाधिराज है।

य एक इत् तमुष्टुहि कृष्टीनां विचर्षणिः। पतिर्जज्ञे वृषक्रतुः ॥

(ऋ० ६।५१।१६)

अर्थात् जो एक ही सब मनुष्यों का ठीक-ठीक देखने वाला सर्वज्ञ सुखों की वर्षा करने वाला, सर्वशक्तिमान् सबका स्वामी है, हे मनुष्य तू सदा उसकी स्तुति कर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माचिदन्यद् विशंसत सखायो मारिषण्यत ।
इन्द्रमित् स्तोता वृषणं सचासुते, मुहुरुक्था च शंसत ।।
(ऋ० ८।१।१)

हे मित्रो ; परमेश्वर को छोड़कर किसी अन्य की स्तुति मत करो। ऐसा करके दुःख मत उठाओ। एकान्त में और यज्ञादि के अवसरों में सामूहिक रूप में सुख शांति के वर्षक उस एक परमेश्वर की ही स्तुति बार-बार करो।

एक एव नमस्यो विक्ष्वीड्यः ।। अ० २।२।२

एक एव नमस्यः सुशेवाः ।। अ० २।२।३

वह एक परमेश्वर ही प्रजाओं द्वारा पूजनीय और नमस्कार करने योग्य है क्योंकि वही उत्तम सुख का प्रदान करने वाला है। इत्यादि मन्त्रों द्वारा वेद विशुद्ध रूप में एक ईश्वर की ही स्तुति, प्रार्थना, उपासना का प्रतिपादन करते हैं जिसका स्वरूप इन शब्दों में बताया गया है कि--

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम् ।
कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान्
व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः ।। (यजु० ४० ८)

अर्थात् ज्ञानी उपासक उस परमेश्वर को प्राप्त करता है जो सर्व शक्तिमान् सर्वथा निराकार, नस-नाड़ी के बन्धन से रहित, निर्विकार, शुद्ध पाप रहित, सर्वज्ञ, मन का साक्षी, सर्वव्यापक और स्वयम्भू है और जो जीव रूप से नित्य प्रजाओं के कल्याण के लिए यथार्थ रूप से पदार्थो का निर्माण करता और वेद द्वारा उनका ज्ञान देता है।

वैदिक ईश्वरवाद पर मैंने सत्य प्रकाशन मथुरा द्वारा प्रकाशित 'वैदिक ईश्वरवाद और वर्तमान विज्ञान'नामक लघु पुस्तक में विचारकिया है और उसके समर्थन में सर आइजकन्यूटन, सर आलिवर लाज, लार्ड केल्विन् लुई पैश्चर, थौमस ऐडीसन् मास्टरमैन, आइन्स्टीन् आदि सुप्रसिद्ध पाश्चात्य वैज्ञानिकों और चार्ल्स कोलमैन, कांट जान्सजर्ना, श्लीगल, मैक्समूलर आदि पाश्चात्य विद्वानों के वचनों को भी वहां उद्धृत किया है। अतः जो इस विषय में वेद को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा को जानना चाहते हैं उन्हें उस लघु पुस्तक को पढ़ना चाहिए। बाइबल कुरान आदि में जो ईश्वर का स्वरूप बताया गया है वह सातवें व चौथे आस्मान में रहने वाला, मनुष्यों के समान अज्ञान, क्रोध, ईर्ष्या-द्वेष, आदि से युक्त है उसके साथ ही ईसा मसीह अथवा मुहम्मद साहब में विश्वास मुक्ति के लिए अनिवार्य माना गया है। अतः उसे विशुद्ध एकेश्वरवाद का नाम नहीं दिया जा सकता। वस्तुतः विज्ञान और तत्वज्ञान [फिलासफी] ऐसी ही परमेश्वर की नरवत् कल्पना (Anthropomorphic Conception of God) का खण्डम करते हैं, ईश्वर की सत्ता का नहीं, यह भी वहां बताया जा चुका है।

२९. महत्त्व का सातवां कारण- सार्वभौम निष्पक्ष शिक्षा

(७) वेदों के महत्व का सप्तम कारण उनकी शिक्षाओं की सार्वभौमता, निष्पक्षता और ओजस्विता है। वेद--

> दृते दृंह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।
> मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे, मित्रस्य चक्षुषा
> समीक्षामहे ॥ (यजु० ३६।१८)

इत्यादि मन्त्रों के द्वारा सब प्राणियों को मित्र को प्रेममय दृष्टि से देखने का उपदेश करते है। इसी विश्वबन्धुत्वता की भावना से ही विश्व शांति की स्थापना हो सकती है। उनकी निष्पक्षपूर्ण शिक्षा हैं।

> 'प्रियः सुकृत् प्रिय इन्द्रे मनायुः प्रियः सुप्रावीः प्रियो अस्य सोमी ॥'
> (ऋ० ४।२५।५)

अर्थात् भगवान् का प्यारा वह होता है जो (सुकृत्) सदा अच्छे काम करने वाला है। जो (मनायुः)मननशील अथवा विचारशील है (प्रियः सुप्रावोः) वह परमेश्वर का प्यारा होता है। जो उत्तम रीति से सब प्राणियों की रक्षा करने वाला होता है और जो (सोमी) स्वयं शांतियुक्त होकर शाँति का प्रसार करने वाला होता है। ऐसा मनुष्य ही भगवान् का प्रिय होता है फिर चाहे वह किसी देश वा स्थान का क्यों न हो। वेदों की इन सार्वभौम निष्पक्षपूर्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षाओं की जब मत-मतान्तरों की संकुचित साम्प्रदायिकतापूर्ण शिक्षाओं के साथ तुलना की जाती है तो आकाश-पाताल का अन्तर प्रतीत होता है।

विस्तार भय से वेद और वैदिक धर्म की विशेषताओं पर अधिक प्रकाश न डालते हुए मैं एक स्वनिर्मित गीत के द्वारा उपसंहार करना उचित समझता हूं। इसमें उपरिनिर्दिष्ट वेदों के महत्व के कारणों और विशेषताओं के अतिरिक्त अन्य भी बहुत सी बातों का निर्देश कर दिया गया है। आर्य कुमार-कुमारियाँ सब इस वेद गौरव धर्म गीत को प्रेमपूर्वक गायें तथा औरों को भी सिखायें तो इससे उनको वैदिक धर्म के तत्वों और विशेषताओं को समझने में सहायता मिलेगी। इस अत्यन्त महत्वपूर्ण युक्तियुक्त विज्ञान सम्मत वैदिक धर्म के अनुसार आचरण करना और वेदों का प्रतिदिन स्वाध्याय करना प्रत्येक आर्य का कर्तव्य है।

मुस्लिम कवि नजरुलइस्लाम द्वारा वेद गौरव गान

वेदों की इस अद्भुत विशेषता से प्रभावित होकर पूर्वी बंगाल देश के काजी नजरुल इस्लाम ने आनन्द बाजार पत्रिका कलकत्ता में वेद विद्या भारत की सनातन व शाश्वत विद्या है। शीर्षक लेख में लिखा है कि "आज हम अत्यन्त दुर्बल, निःसहाय हो गये हैं। हमारे कर्म विमुख प्राणों में नई आशा का प्रकाश जलाने के लिए वेद विद्या की उस प्राचीन मर्यादा को वापस लाना होगा। नव जागरण के लिए भारत वर्ष में वह पूर्ण प्रदीप्त जीवन की प्रार्थना हमारे प्रति दिन का स्वाध्याय बने जिससे हम पुनः वेदपन्थी बनकर अभ्युदय के पथ पर अपनी जय-यात्रा जारी रख सकें।"

वेद विद्या भारत की एक सनातन व शाश्वत विद्या है। आद्विज चाण्डाल समस्त भारतवासी के घर-घर में इस वेदवाणी का प्रचार कर सबको महान् और पवित्र बनाना होगा, सबको पुनीत व शुद्ध करना होगा।

वेद विद्या सम्पूर्ण मानव की साधारण सम्पत्ति है— किसी का व्यक्तिगत अधिकार इस पर नहीं है। साम्य समुदारता, जाति भेद की शृंखलाओं को तोड़ना और नारायण के प्रति श्रद्धा ही वेद का मूल अर्थ है।

वेद के ऋषि ने अपने अमृत पुत्र विश्वासी समस्त नर-नारायण की इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधा कलश की अमृतधारा का पान करने के लिए बार-बार पुकारा है-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, शत्रु-मित्र सभी को उस महाप्रज्ञा की, इस अति-शक्तिशाली भाषा, इस अथाह ज्ञान, इस कल्याणवाणी का सन्देश प्राप्त हो।

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्म राजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय ॥

(यजु० २६।२)

हिन्दु, मुसलमान, ईसाई आदि सभी धर्मों के अनुयायियों को यदि हम एकात्म रूप से देख सकें, सभी को यदि अमृत पुत्र के रूप में ग्रहण कर सकें तब ही हम अपने को वेदपन्थी कह सकेंगे। अर्थात् यही (Universal Fraternity (विश्वबन्धुत्व) वेदों का मूल तत्व है।

अतः साम्प्रदायिकता व मतान्धता को भुला कर शताब्दियों की मृत्युजड़ता को दूर कर हमें वेदों के उद्दीप्त आव्हान से विकसित होना होगा, तभी हमारा जीवन सार्थक होगा।

(आनन्द बाजार पत्रिका, बंगला दैनिक में श्री जितेन्द्र वन्द्योपाध्याय द्वारा अनूदित-सार्वदेशिक नई दिल्ली ३० मई १९७१ के अङ्क से यहां उद्धृत)।

भारत के का. राष्ट्रपति की वेदो में श्रद्धा—

२७ मार्च १९७७ को नई देहली में वैदिक सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए भारत के कार्य निर्वाहक राष्ट्रपति महामहिम श्री बासप्पा दसप्पा जत्ती जी ने वेदों के विषय में कहा-

"वेद भारतीय संस्कृति और भारतीय साहित्य की एक अमूल्य निधि है। सारे संसार के विद्वानों ने वेदों की महत्ता को स्वीकार किया है। बहुत से प्राचीन विद्वान् इसको किसी पुरुष की रचना न मानकर अलौकिक देन के रूप में स्वीकार करते है। आधुनिक से आधुनिक समालोचक भी इनका संसार के सबसे प्राचीन साहित्य के रूप में आदर करते हैं। वास्तव में वेद ज्ञान का अगाध भण्डार है। यह एक साहित्य है जिसने भारतीय संस्कृत और भारतीय साहित्य को सबसे अधिक प्रभावित किया है।

--श्री बा० दा० जत्ती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY
Accession
Class on
Cat on
Tag etc.
Checked
Any Other

पं० विश्वनाथ स्मृति संग्रह

ओ३म्

वेद गौरव गान:

वेदों का स्वाध्याय कर हम, जीवन उच्च बनावें ।
उनकी शिक्षा पर चलकर हम, परम शांति को पावें ।। १

वेद सत्यविद्याभण्डार, उनका कर्त्ता करुणासागर ।
होगा उनसे जगदुद्धार, यह विश्वास जमायें ।। २

सार्वभौम शिक्षा वेदों की, अत्युत्तम शिक्षा वेदों की ।
निज पावन करके हम, सबको आर्य बनावें ।। ३

एकेश्वर पूजा सिखलाते, भेद भाव को दूर भगाते ।
प्राणीमात्र से प्रेम बढ़ाते, वेद इन्हें अपनावें ।। ४

ज्ञान कर्म शुभ भक्ति मिलाते, श्रद्धा मेल कराते ।
वेद तमिस्त्रा दूर हटाते, इनको पढ़ें पढ़ावें ।। ५

बुद्धि विरुद्ध नहीं कुछ इनमें, व्यष्टि समष्टि मेल है इनमें ।
सत्य मार्ग को वेद दिखाते, इनको सुनें सुनावें ।। ६

व्यक्ति समाज राष्ट्र परिवार, सब कर्तव्यों का सुविचार ।
वेद सिखाते हैं ये चार, क्यों नही इनका गौरव गावें ।। ७

अद्भुत मेल धर्म विज्ञान, बतलाते हैं वेद महान ।
सब विद्याओं की ये खान, पढ़कर परम मोद हम पावें ।। ८

ऋषि मुनियों ने गौरव गाया, तार्किकगण ने सीस नमाया ।
मर्म समझ में पूर्ण न आया, आओ उसका पता लगायें ।। ९

पिता पुत्र को देता ज्ञान, करुणा सागर जो भगवान् ।
वेद दिये विज्ञान निधान, श्रद्धा पूर्वक उसको ध्यावें ।। १०

धर्मानन्द सरस्वती विद्यामार्तण्ड
(अध्यक्ष विश्व वेद परिषद)
आनन्द कुटीर ज्वालापुर (उ० प्र०)

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
8153

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

विश्ववेद परिषद्

सदस्यता-प्रपत्र

श्रीयुत मान्य मन्त्री जी विश्ववेद परिषद्

नमस्ते !

मैं विश्ववेद परिषद् के इस उदात्त उद्देश्य से सर्वथा सहमत हूं कि समस्त समुचित साधनों से विश्व में वेदों और वैदिक शिक्षाओं का प्रचार किया जाए। मैं प्रतिदिन वेदों का स्वाध्याय किया करूंगा और उनकी सार्वभौम युक्तियुक्त शिक्षा के प्रचार में यथाशक्ति प्रयत्नशील रहूँगा। मुझे परिषद् का सदस्य-संरक्षक, पोषक-संपोषक बना कर अनुगृहीत करें। मैं निर्धारित सदस्यता शुल्क इस पत्र के साथ भेज रहा हूँ तथा भविष्य में भी सहर्ष देता रहूँगा।

GURUKUL KANGRI LIBRARY
Accession 141113
Class on
Cat on
Tag etc. Sharma 22.11.03
Checked
Any Other

भवदीय

नाम

कार्य

पता

वार्षिक चन्दा

तिथि

वार्षिक सदस्यता शुल्क १०) रु०, संरक्षक १०१) रु०, पोषक २५१) रु०, संपोषक ५०१) रु० अधिरक्षक १००१) रु०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

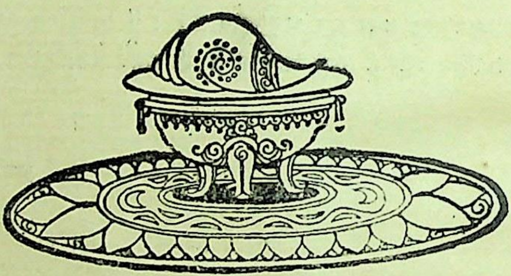

मुद्रक— "महालक्ष्मी" गुरुद्वारा रोड, ज्वालापुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

PAYMENT PROCESSED
Vide Bill No 646 Dated 19/11/94
Anis Book Binder

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar